पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (WBBSE)

कक्षा 9 हिंदी
प्रथम भाषा

अध्याय 2

प्रश्न बैंक

अध्याय 2: धीरे-धीरे उतर क्षितिज से

बिरला एजुकेशन - मुफ्त नोट्स

birlaeducation.org

अध्याय 2: धीरे-धीरे उतर क्षितिज से

कवयित्री: महादेवी वर्मा

कहानी: पाठ को ऐसे याद रखो

वसंत की रात धीरे-धीरे आसमान और धरती के मिलने की जगह, क्षितिज से नीचे उतर रही है। कवयित्री महादेवी वर्मा उसे एक सुंदर युवती के रूप में देखती हैं जो अपने प्रिय से मिलने जा रही है। उसके बालों में तारे गुँथे हैं, माथे पर नया चाँद फूल की तरह सजा है और चाँद की किरणों के कंगन उसके हाथों में हैं।

पत्तों की सरसराहट उसके घुँघरुओं की आवाज है और भौंरों की गूँज उसके पैरों की किंकिणि है। वह मुस्कुराते हुए आ रही है और अपनी मुस्कान से चाँदनी की चाँदी जैसी धार पूरी धरती पर बहा रही है। उसके हाथों में मीठी यादों की अंजलि है और वह मलय पर्वत की हवा का रेशमी वस्त्र पहने हुए है।

उसके आने से नदी का हृदय सिहर उठता है, फूल अमृत भरकर खिल उठते हैं और धरती अपने प्रिय के कदमों की आहट सुनकर पुलकित हो जाती है। पूरी कविता में प्रकृति को एक सजीव युवती के रूप में दिखाया गया है।

भावार्थ

पहला पद्यांश: 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से, आ वसंत-रजनी!'

धीरे धीरे उतर क्षितिज से
आ वसन्त-रजनी!
तारकमय नव वेणीबन्धन
शीश-फूल कर शशि का नूतन,
रश्मि-वलय सित घन-अवगुण्ठन,
मुक्ताहल अभिराम बिछा दे
चितवन से अपनी!
पुलकती आ वसन्त-रजनी!

birlaeducation.org

भावार्थ: कवयित्री वसंत की रात से कहती हैं कि वह धीरे-धीरे क्षितिज से धरती पर उतरे। वह अपनी वेणी में तारे गूँथकर आई है, उसके माथे पर नया चाँद फूल की तरह सजा है, चाँद की किरणों के कंगन उसके हाथों में हैं और सफेद बादलों का घूँघट उसके चेहरे पर है। जब वह पृथ्वी पर उतरे तो अपने हृदय की भावना रूपी सुंदर मोतियों को अपनी चितवन से पूरी पृथ्वी पर बिछा दे। वह पुलकित होकर, अर्थात् प्रसन्नता से भरकर आ रही है।

दूसरा पद्यांश

मर्मर की सुमधुर नूपुर-ध्वनि,
अलि-गुंजित पद्मों की किंकिणि,
भर पद-गति में अलस तरंगिणि,
तरल रजत की धार बहा दे
मृदु स्मित से सजनी!
विहँसती आ वसन्त-रजनी!

भावार्थ: पत्तों की मर्मर ध्वनि वसंत-रजनी के घुँघरुओं की आवाज है और कमलों पर मँडराते भौंरों की गूँज उसके पैरों की किंकिणि की सुमधुर ध्वनि है। उसके मंद-मंद चलने से नदी भी अलसाई हुई बह रही है। वह मुस्कुराते हुए आ रही है और अपनी मुस्कान से चाँदनी की चाँदी जैसी धार पूरी धरती पर बहा रही है।

तीसरा पद्यांश

पुलकित स्वप्नों की रोमावलि,
कर में ही स्मृतियों की अंजलि,
मलयानिल का चल दुकूल अलि!
चिर छाया-सी श्याम, विश्व को
आ अभिसार बनी!
सकुचती आ वसन्त-रजनी!

भावार्थ: कवयित्री चाहती हैं कि जब वसंत-रजनी धरती पर उतरे तो उसके हाथों की अंजलि मीठी स्मृतियों से भरी हो और वह मलय पर्वत से आने वाली हवा का रेशमी वस्त्र पहने हो। वह अपने प्रिय से मिलने जा रही है, इसलिए वह छाया की तरह श्याम और सुंदर लग रही है। वह सकुचाते हुए, अर्थात् शरमाते हुए, अभिसार के लिए आ रही है।

चौथा पद्यांश

सिहर सिहर उठता सरिता-उर,
खुल खुल पड़ते सुमन सुधा-भर,
मचल मचल आते पल फिर फिर,
सुन प्रिय की पद-चाप हो गयी
पुलकित यह अवनी!
सिहरती आ वसन्त-रजनी!

birlaeducation.org

भावार्थ: वसंत-रजनी के आने से नदी का हृदय सिहर उठता है, फूल अमृत भरकर खिल उठते हैं और पल-पल मचल उठते हैं। धरती अपने प्रिय के कदमों की आहट सुनकर पुलकित हो जाती है। पूरी कविता में प्रकृति को एक सजीव युवती के रूप में दिखाया गया है, जो अपने प्रिय से मिलने आ रही है।

कवयित्री परिचय

महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं, जिन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। उनका जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। 'यामा' और 'दीपशिखा' पर उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

कठिन शब्द और उनके अर्थ

शब्द	अर्थ
क्षितिज	जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए दिखते हैं
शशि	चंद्रमा
नूतन	नया
रश्मि-वलय	किरणों का कंगन
अवगुण्ठन	घूँघट

मुक्ताहल	मोती
अभिराम	सुंदर
मर्मर	पत्तों की सरसराहट
नुपूर	घुँघरू
किंकिणि	पैरों का आभूषण, करधनी
मलयानिल	मलय पर्वत से आने वाली हवा
अभिसार	प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का स्थान

1. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)

1. 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से' की कवयित्री कौन हैं?

(क) सुभद्रा कुमारी चौहान

(ख) महादेवी वर्मा

(ग) मीरा बाई

(घ) सरोजिनी नायडू

उत्तर: (ख) महादेवी वर्मा

birlaeducation.org

2. कवयित्री किसे धीरे-धीरे क्षितिज से उतरने को कहती हैं?

(क) शशि को

(ख) तारे को

(ग) वसंत को

(घ) वसंत-रजनी को

उत्तर: (घ) वसंत-रजनी को

---

3. कविता में किसका मानवीकरण किया गया है?

(क) वसंत का

(ख) चंद्रमा का

(ग) वसंत-रजनी का

(घ) क्षितिज का

उत्तर: (ग) वसंत-रजनी का

---

4. 'रश्मि-वलय' का क्या अर्थ है?

(क) किरणों का हार

(ख) किरणों का कंगन

(ग) किरणों की माला

(घ) किरणों का मुकुट

उत्तर: (ख) किरणों का कंगन

---

5. 'मलयानिल' का क्या तात्पर्य है?

(क) मलय पर्वत

(ख) वसंती हवा

(ग) मलय पर्वत से आने वाली हवा

(घ) नीला मलय

उत्तर: (ग) मलय पर्वत से आने वाली हवा

---

6. 'दीपशिखा' किसकी रचना है?

(क) रामकुमार वर्मा की

(ख) महादेवी वर्मा की

(ग) निराला की

(घ) प्रसाद की

उत्तर: (ख) महादेवी वर्मा की

---

7. महादेवी वर्मा को किस रचना पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

birlaeducation.org

(क) 'यामा' पर

(ख) 'दीपशिखा' पर

(ग) 'यामा' और 'दीपशिखा' पर

(घ) 'नीहार' पर

उत्तर: (ग) 'यामा' और 'दीपशिखा' पर

---

8. छायावाद के चार स्तंभों में कौन नहीं हैं?

(क) माखनलाल चतुर्वेदी

(ख) महादेवी वर्मा

(ग) निराला

(घ) प्रसाद

उत्तर: (क) माखनलाल चतुर्वेदी

---

9. 'अतीत के चलचित्र' किसकी रचना है?

(क) कैफ़ी आजमी की

(ख) मन्नू भंडारी की

(ग) महादेवी वर्मा की

(घ) पाश की

उत्तर: (ग) महादेवी वर्मा की

---

10. 'मेरा परिवार' किस विधा की रचना है?

(क) रेखाचित्र

(ख) निबंध

(ग) नाटक

(घ) उपन्यास

उत्तर: (क) रेखाचित्र

---

11. वसंत-रजनी के माथे पर क्या सजा है?

(क) तारे

(ख) नूतन शशि (नया चाँद)

(ग) मोती

(घ) फूल

उत्तर: (ख) नूतन शशि (नया चाँद)

---

2. रिक्त स्थान भरो

birlaeducation.org

1. कवयित्री _____ को धीरे-धीरे क्षितिज से उतरने को कहती हैं।

उत्तर: वसंत-रजनी

---

2. वसंत-रजनी ने अपनी वेणी में _____ गुंथे हैं।

उत्तर: तारे

---

3. 'रश्मि-वलय' का अर्थ है किरणों का _____।

उत्तर: कंगन

---

4. पत्तों की मर्मर ध्वनि वसंत-रजनी के _____ की ध्वनि की तरह है।

उत्तर: घुँघरुओं

---

5. महादेवी वर्मा का जन्म सन् _____ में फर्रुखाबाद में हुआ था।

उत्तर: 1907

---

6. महादेवी वर्मा को 'यामा' और 'दीपशिखा' पर _____ पुरस्कार मिला।

उत्तर: ज्ञानपीठ

---

7. वसंत-रजनी की कल्पना उस _____ के रूप में की गई है जो अपने प्रिय से मिलने जा रही है।

उत्तर: प्रेमिका

---

8. 'मुक्ताहल' का अर्थ है _____।

उत्तर: मोती

---

9. 'अवगुण्ठन' का अर्थ है _____।

उत्तर: घूँघट

---

10. 'अभिराम' का अर्थ है _____।

उत्तर: सुंदर

---

3. सही / गलत

1. 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से' के कवि निराला हैं।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: इस कविता की कवयित्री महादेवी वर्मा हैं।

---

2. कविता में वसंत-रजनी का मानवीकरण एक सुंदर युवती के रूप में किया गया है।

उत्तर: सही।

birlaeducation.org

---

3. वसंत-रजनी ने अपनी वेणी में फूल गुंथे हैं।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: वसंत-रजनी ने अपनी वेणी में तारे गुंथे हैं।

---

4. महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है।

उत्तर: सही।

---

5. 'नीहार' महादेवी वर्मा की रचना है।

उत्तर: सही।

---

6. कविता में चंद्रमा की चाँदनी को 'तरल रजत की धार' कहा गया है।

उत्तर: सही।

---

7. महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में हुआ था।

उत्तर: सही।

---

8. वसंत-रजनी के आने से धरती मुरझा जाती है।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: वसंत-रजनी के आने से धरती पुलकित हो उठती है।

---

9. वसंत-रजनी की मुस्कान से चाँदनी की चाँदी जैसी धार बहती है।

उत्तर: सही।

---

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (SAQ)

1. धीरे-धीरे कौन क्षितिज से उतर रहा है? पाठ्यपुस्तक

वसंत रूपी रजनी धीरे-धीरे क्षितिज से उतर रही है। कवयित्री ने उसे एक सुंदर युवती के रूप में चित्रित किया है।

---

2. कवयित्री वसंत-रजनी से कैसे आने को कहती है? पाठ्यपुस्तक

कवयित्री वसंत-रजनी को पुलकित होकर आने को कहती है। वह चाहती है कि वह मुस्कुराते हुए, शरमाते हुए धीरे-धीरे धरती पर उतरे।

---

3. 'मुक्ताहल अभिराम बिछा दे, चितवन से अपनी' का भाव स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

कवयित्री वसंत-रजनी से कहती हैं कि जब वह पृथ्वी पर आए तो अपने हृदय की भावना रूपी सुंदर मोतियों को पूरी पृथ्वी पर बिछा दे।

---

birlaeducation.org

4. किसकी ध्वनि घुँघरुओं और किंकिणि की सुमधुर ध्वनि की तरह प्रतीत होती है? पाठ्यपुस्तक

पत्तों की मर्मर ध्वनि वसंत-रजनी के घुँघरुओं की और भौंरों की आवाज उसके पैरों की किंकिणि की सुमधुर ध्वनि की तरह प्रतीत होती है।

---

5. 'कर में हो स्मृतियों की अंजलि' का भाव स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

कवयित्री चाहती हैं कि जब वसंत-रजनी धरती पर उतरे तो उसके हाथों की अंजलि मीठी स्मृतियों से भरी हो।

---

6. वसंत-रजनी की कल्पना कवयित्री ने किस रूप में की है? पाठ्यपुस्तक

कवयित्री ने वसंत-रजनी की कल्पना उस प्रेमिका के रूप में की है जो अभिसार के लिए, अपने प्रिय से मिलने जा रही है।

---

7. 'सजनी' कहकर किसे संबोधित किया गया है? अतिरिक्त

'सजनी' कहकर वसंत-रजनी को संबोधित किया गया है। सजनी का अर्थ है सखी या प्रेमिका।

---

8. प्रिय की पद-चाप सुनकर क्या होता है? अतिरिक्त

प्रिय की पद-चाप सुनकर धरती पुलकित हो उठती है। नदी का हृदय सिहर उठता है और फूल सुधा भरकर खिल उठते हैं।

---

9. महादेवी वर्मा का जन्म कब और कहाँ हुआ था? पाठ्यपुस्तक

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था।

---

10. 'यामा' और 'दीपशिखा' पर महादेवी वर्मा को कौन-सा पुरस्कार मिला? पाठ्यपुस्तक

'यामा' और 'दीपशिखा' पर महादेवी वर्मा को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

---

11. 'क्षितिज' का अर्थ क्या है? अतिरिक्त

'क्षितिज' का अर्थ है वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए दिखते हैं।

---

12. 'रश्मि-वलय' का अर्थ क्या है? अतिरिक्त

'रश्मि-वलय' का अर्थ है किरणों का कंगन। वसंत-रजनी ने चाँद की किरणों के कंगन पहने हैं।

---

13. 'मलयानिल' का अर्थ क्या है? अतिरिक्त

'मलयानिल' का अर्थ है मलय पर्वत से आने वाली हवा। वसंत-रजनी ने मलय की हवा का रेशमी वस्त्र पहना है।

---

14. महादेवी वर्मा की किन्हीं दो काव्य-रचनाओं के नाम लिखिए। पाठ्यपुस्तक

महादेवी वर्मा की दो काव्य-रचनाएँ 'नीहार' और 'रश्मि' हैं। ('यामा' और 'दीपशिखा' भी उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।)

---

15. 'नूपुर' और 'किंकिणि' क्या हैं? अतिरिक्त

'नूपुर' का अर्थ है घुँघरू और 'किंकिणि' का अर्थ है पैरों का आभूषण (करधनी)। पत्तों की मर्मर ध्वनि नूपुर की और भौंरों की गूँज किंकिणि की ध्वनि की तरह है।

birlaeducation.org

---

16. 'तरल रजत की धार' किसे कहा गया है? अतिरिक्त

'तरल रजत की धार' चाँदनी को कहा गया है। वसंत-रजनी अपनी मुस्कान से चाँदनी की चाँदी जैसी धार बहाती है।

---

17. वसंत-रजनी के आने से नदी पर क्या प्रभाव पड़ता है? अतिरिक्त

वसंत-रजनी के आने से नदी का हृदय सिहर उठता है।

---

18. वसंत-रजनी के आने से फूलों पर क्या प्रभाव पड़ता है? अतिरिक्त

वसंत-रजनी के आने से फूल अमृत (सुधा) भरकर खिल उठते हैं।

---

19. महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' क्यों कहा जाता है? अतिरिक्त

महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनके काव्य में भी मीराबाई की तरह अज्ञात प्रिय से मिलन की आकांक्षा प्रमुख है।

---

20. छायावाद के चार स्तंभों के नाम लिखिए। पाठ्यपुस्तक

छायावाद के चार स्तंभ हैं: जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा।

---

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ)

1. 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से' कविता का मूल भाव (सारांश) अपने शब्दों में लिखें। पाठ्यपुस्तक

इस कविता में महादेवी वर्मा ने वसंत की रात्रि का मानवीकरण एक सुंदर युवती के रूप में किया है, जो धीरे-धीरे क्षितिज से धरती पर उतर रही है। वह अपने बालों में तारे गूँथकर, माथे पर नए चाँद को फूल की तरह सजाकर, किरणों के कंगन पहनकर और सफेद बादलों का घूँघट ओढ़कर आ रही है। पत्तों की सरसराहट उसके घुँघरुओं की आवाज है और भौंरों की गूँज उसके पैरों की किंकिणि है। वह मुस्कुराते हुए चाँदनी की चाँदी जैसी धार बहाती है। उसके हाथों में मीठी यादों की अंजलि है और वह मलय पर्वत की हवा का रेशमी वस्त्र पहने है। उसके आने से नदी का हृदय सिहर उठता है, फूल खिल उठते हैं और धरती अपने प्रिय के कदमों की आहट सुनकर पुलकित हो जाती है।

---

2. पठित कविता के आधार पर महादेवी वर्मा के प्रकृति-प्रेम का वर्णन करें। पाठ्यपुस्तक

महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। छायावादी कवियों की दृष्टि में प्रकृति सजीव और मानवी रूप में दिखाई देती है, इसलिए उसमें अपनी ही भावनाओं का प्रतिबिंब दिखाई देना सहज है। महादेवी वसंत की रात्रि को एक सुंदर युवती के रूप में देखती हैं और प्रकृति के क्रिया-कलापों में अपने प्रणय के स्वप्नों का साक्षात्कार करती हैं। वे जड़ और चेतन में कोई अंतर नहीं मानतीं, क्योंकि एक ही सत्ता से दोनों प्रकाशित होते हैं। यही भावना उनके जीवन में आशा और उल्लास का संचार करती है। प्रकृति के सौंदर्य में ही उन्हें अपने प्रिय से मिलन की कल्पना दिखाई देती है।

---

3. महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषताओं के बारे में लिखें। पाठ्यपुस्तक

birlaeducation.org

महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख स्तंभ हैं। उनकी भाषा कोमलकांत पदावली और चित्रमयी है, जिसमें तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है, फिर भी उसमें कानों को अप्रिय लगने वाला कोई शब्द नहीं है। उनकी भाषा ध्वनिपूर्ण और संगीतमय है। पूरी कविता में मानवीकरण अलंकार है और जड़ तथा चेतन में अंतर न मानते हुए प्रकृति को सजीव रूप में चित्रित किया गया है। उनके काव्य में अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है और अज्ञात प्रिय से मिलन की आकांक्षा प्रमुख है। सरलता, सरसता और सुकुमारता उनकी भाषा के प्रधान गुण हैं।

---

4. कविता के प्रथम पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या करें: 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से, आ वसंत-रजनी! तारकमय नव वेणीबन्धन।' पाठ्यपुस्तक

प्रस्तुत अंश महादेवी वर्मा की कविता 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से' से लिया गया है। इसमें कवयित्री वसंत की रात्रि का सुंदर चित्रण करती हैं। वे वसंत रूपी रजनी से आग्रह करती हैं कि वह अपनी वेणी में तारों को सजाकर धीरे-धीरे क्षितिज से नीचे उतरे। जब वह पृथ्वी पर उतरे तो फूले हुए शीश को घूँघट और चंद्रमा की रुपहली किरणों को कंगन की तरह सजा ले। जब वह आए तो अपने हृदय की भावना रूपी सुंदर मोतियों को पूरी पृथ्वी पर बिछा दे। उसका पृथ्वी पर आगमन पुलक से भरा हो। कवयित्री का मानना है कि एक ही सत्ता से जड़ और चेतन दोनों प्रकाशित होते हैं, इसलिए वह दोनों में कोई अंतर नहीं करतीं।

---

5. द्वितीय पद्यांश का भाव स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

इस पद्यांश में कवयित्री कहती हैं कि पत्तों की मर्मर ध्वनि वसंत-रजनी के घुँघरुओं की आवाज है और भौंरों की गूँज उसके पैरों की किंकिणि की सुमधुर ध्वनि की तरह है। वसंत-रजनी मुस्कुराते हुए आ रही है और अपनी मुस्कान से चाँदनी की चाँदी जैसी धार

पूरी धरती पर बहा रही है। इस प्रकार कवयित्री ने प्रकृति की ध्वनियों और चाँदनी को वसंत-रजनी के आभूषणों और मुस्कान के रूप में चित्रित करके वसंत की रात को एक सजीव युवती बना दिया है।

---

6. तृतीय पद्यांश का भाव स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

इस पद्यांश में कवयित्री कहती हैं कि जब वसंत-रजनी धरती पर उतरे तो उसके हाथों की अंजलि मीठी स्मृतियों से भरी हो और वह मलय पर्वत से आने वाली हवा का रेशमी वस्त्र पहने हो। वह अपने प्रिय से मिलने जा रही है, इसलिए उसके मन में मिलने की उमंग है। कवयित्री ने स्मृतियों को अंजलि और मलय की हवा को वस्त्र कहकर वसंत की रात के सौंदर्य को एक प्रेमिका के रूप में चित्रित किया है, जो अभिसार के लिए अपने प्रिय से मिलने जा रही है।

---

7. चतुर्थ पद्यांश का भाव स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक

इस पद्यांश में कवयित्री कहती हैं कि वसंत-रजनी के आने से नदी का हृदय सिहर उठता है, फूल अमृत भरकर खिल उठते हैं और धरती अपने प्रिय के कदमों की आहट सुनकर पुलकित हो जाती है। वसंत की रात के आगमन से पूरी प्रकृति में नई जान आ जाती है। कवयित्री ने यहाँ प्रकृति को सजीव रूप में दिखाया है: नदी का हृदय है, फूलों में अमृत है और धरती प्रिय के आने की आहट सुनकर पुलकित होती है।

---

8. वसंत-रजनी के मानवीकरण का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

महादेवी वर्मा ने वसंत की रात्रि का मानवीकरण एक सुंदर युवती के रूप में किया है। उसके बालों में तारे गुँथे हैं, माथे पर नया चाँद फूल की तरह सजा है और चाँद की किरणों के कंगन उसके हाथों में हैं। पत्तों की सरसराहट उसके घुँघरुओं की आवाज है और भौंरों की गूँज उसके पैरों की किंकिणि है। वह मुस्कुराते हुए आ रही है, उसके हाथों में मीठी यादों की अंजलि है और वह मलय पर्वत की हवा का रेशमी वस्त्र पहने है। वह अपने प्रिय से मिलने जा रही है। इस प्रकार पूरी कविता में प्रकृति को एक सजीव युवती के रूप में दिखाया गया है।

biharboardeducation.org

---

9. कविता में प्रयुक्त अलंकारों का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

इस कविता में सबसे प्रमुख अलंकार मानवीकरण है, जिसमें वसंत की रात्रि को एक सुंदर युवती के रूप में चित्रित किया गया है। कवयित्री ने उपमा का भी सुंदर प्रयोग किया है, जैसे चाँदनी को चाँदी की धार कहना और पत्तों की सरसराहट को घुँघरुओं की आवाज कहना। रूपक अलंकार भी है, जैसे किरणों को कंगन और स्मृतियों को अंजलि कहना। इन अलंकारों के कारण वसंत की रात का चित्र पाठक के सामने सजीव हो उठता है और कविता का सौंदर्य बढ़ जाता है।

---

10. महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय लिखिए। पाठ्यपुस्तक

महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं, जिन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। उनका जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। उनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा और दीपशिखा हैं। 'यामा' और 'दीपशिखा' पर उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। उनकी गद्य-रचनाएँ 'अतीत के चलचित्र' और 'मेरा परिवार' हैं, जो रेखाचित्र विधा की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। वे छायावाद के चार स्तंभों (प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी) में से एक हैं।

---

11. महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' क्यों कहा जाता है? अतिरिक्त

महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनके काव्य में भी मीराबाई की तरह अज्ञात प्रिय से मिलन की आकांक्षा प्रमुख है। जैसे मीरा श्रीकृष्ण को अपना प्रिय मानकर उनसे मिलने की चाह रखती थीं, वैसे ही महादेवी वर्मा

भी अपने अज्ञात प्रिय से मिलन की कल्पना करती हैं। उनकी कविताओं में वेदना, प्रेम और समर्पण का भाव है। 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से' कविता में भी वसंत-रजनी अपने प्रिय से मिलने जा रही है, जो इसी मिलन की आकांक्षा को दर्शाता है।

---

12. छायावाद की विशेषताएँ बताइए और उसमें महादेवी वर्मा का स्थान स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

छायावाद हिंदी साहित्य की वह धारा है जिसमें प्रकृति को सजीव और मानवी रूप में चित्रित किया जाता है और कवि अपनी भावनाओं का प्रतिबिंब प्रकृति में देखता है। छायावादी काव्य में कोमलकांत पदावली, चित्रमयी भाषा, मानवीकरण अलंकार और अज्ञात प्रिय से मिलन की आकांक्षा प्रमुख है। छायावाद के चार स्तंभ जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा हैं। महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं और उनकी रचनाओं में प्रकृति-प्रेम, वेदना और प्रिय से मिलन की आकांक्षा स्पष्ट दिखाई देती है।

---

13. कविता में वसंत की रात का चित्रण कैसे किया गया है? अतिरिक्त

इस कविता में महादेवी वर्मा ने वसंत की रात का सजीव चित्रण किया है। रात धीरे-धीरे क्षितिज से धरती पर उतर रही है। पत्तों की सरसराहट और भौंरों की गूँज से वातावरण में मधुर ध्वनि गूँज रही है। चाँदनी की चाँदी जैसी धार पूरी धरती पर बह रही है और मलय पर्वत से आने वाली हवा में सुगंध है। वसंत-रजनी के आने से नदी का हृदय सिहर उठता है, फूल अमृत भरकर खिल उठते हैं और धरती प्रिय के कदमों की आहट सुनकर पुलकित हो जाती है। इस प्रकार कवयित्री ने वसंत की रात को एक सजीव और सुंदर दृश्य बना दिया है।

---

14. 'अभिसार' का अर्थ बताइए और कविता में इसका भाव स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

'अभिसार' का अर्थ है प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का स्थान या मिलने के लिए जाना। इस कविता में वसंत-रजनी की कल्पना उस प्रेमिका के रूप में की गई है जो अभिसार के लिए, अपने प्रिय से मिलने जा रही है। वह अपने बालों में तारे गूँथकर, माथे पर नया चाँद सजाकर और किरणों के कंगन पहनकर सज-धजकर आ रही है। उसके मन में मिलने की उमंग है और उसके आने से पूरी प्रकृति पुलकित हो उठती है। इस प्रकार 'अभिसार' कविता का केंद्रीय भाव है, जो महादेवी वर्मा के काव्य में अज्ञात प्रिय से मिलन की आकांक्षा को दर्शाता है।

---

15. कविता में 'सजनी' कहकर किसे संबोधित किया गया है? इसका भाव स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

कवयित्री ने वसंत-रजनी को 'सजनी' कहकर संबोधित किया है। 'सजनी' का अर्थ है सखी या प्रेमिका। इस संबोधन से कवयित्री और वसंत-रजनी के बीच एक आत्मीय और मधुर संबंध दिखाई देता है, जैसे कोई सखी अपनी सखी से बात कर रही हो। कवयित्री वसंत-रजनी से आग्रह करती हैं कि वह धीरे-धीरे, मुस्कुराते हुए और पुलकित होकर धरती पर उतरे। 'सजनी' कहने से वसंत की रात एक दूर की प्रकृति नहीं रहती, बल्कि कवयित्री की अपनी सखी बन जाती है, जिससे कविता में आत्मीयता और मधुरता आ जाती है।

---

16. महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना और मिलन की आकांक्षा का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना और अज्ञात प्रिय से मिलन की आकांक्षा प्रमुख है। जैसे मीराबाई अपने प्रिय श्रीकृष्ण से मिलने की चाह रखती थीं, वैसे ही महादेवी वर्मा भी अपने अज्ञात प्रिय से मिलन की कल्पना करती हैं। 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से' कविता में भी वसंत-रजनी अपने प्रिय से मिलने जा रही है, जो इसी मिलन की आकांक्षा को दर्शाता है। कवयित्री प्रकृति के सौंदर्य

birlaeducation.org

में अपने प्रिय से मिलन की कल्पना करती हैं। यही वेदना और मिलन की आकांक्षा उनके काव्य की आत्मा है और इसी कारण उन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है।

---

17. वसंत-रजनी के शृंगार का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

वसंत-रजनी का शृंगार बहुत सुंदर है। उसके बालों में तारे गुँथे हैं, माथे पर नया चाँद फूल की तरह सजा है और चाँद की किरणों के कंगन उसके हाथों में हैं। उसने सफेद बादलों का घूँघट ओढ़ा है और पत्तों की सरसराहट उसके घुँघरुओं की आवाज है, जबकि भौंरों की गूँज उसके पैरों की किंकिणि है। वह मलय पर्वत से आने वाली हवा का रेशमी वस्त्र पहने है और उसके हाथों में मीठी यादों की अंजलि है। इस प्रकार कवयित्री ने वसंत की रात को एक सजी-धजी युवती के रूप में चित्रित किया है।

---

18. महादेवी वर्मा की गद्य-रचनाओं का परिचय दीजिए। अतिरिक्त

महादेवी वर्मा की प्रमुख गद्य-रचनाएँ 'अतीत के चलचित्र' और 'मेरा परिवार' हैं। ये रेखाचित्र विधा की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। 'अतीत के चलचित्र' में महादेवी वर्मा ने अपने जीवन में मिले लोगों के सजीव चित्र प्रस्तुत किए हैं, जबकि 'मेरा परिवार' में उन्होंने अपने पालतू पशु-पक्षियों का वर्णन किया है। इन रचनाओं में उनकी कोमल और संवेदनशील दृष्टि दिखाई देती है। महादेवी वर्मा केवल कवयित्री ही नहीं, बल्कि एक श्रेष्ठ गद्य-लेखिका भी थीं और उनकी गद्य-रचनाओं में भी उनकी काव्यात्मक भाषा की झलक मिलती है।

---

19. कविता के शीर्षक 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से' की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

कविता का शीर्षक 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से' पूरी तरह सार्थक है, क्योंकि यही कविता की पहली पंक्ति भी है और इसका केंद्रीय भाव भी है। वसंत की रात धीरे-धीरे क्षितिज से धरती पर उतर रही है। 'धीरे-धीरे' शब्द से रात के उतरने की गति और उसकी कोमलता का बोध होता है। पूरी कविता में इसी उतरने का चित्रण है: वसंत-रजनी सज-धजकर, मुस्कुराते हुए, धीरे-धीरे धरती पर आ रही है। शीर्षक कविता के विषय, भाव और चित्रण तीनों को व्यक्त करता है, इसलिए यह पूरी तरह उपयुक्त है।

---

20. कविता में 'प्रिय' कौन है? कवयित्री का उससे मिलन का भाव स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

इस कविता में 'प्रिय' वह अज्ञात प्रिय है जिससे मिलने के लिए वसंत-रजनी जा रही है। महादेवी वर्मा के काव्य में प्रिय कोई निश्चित व्यक्ति नहीं है; वह अज्ञात सत्ता है, जिससे मिलने की आकांक्षा कवयित्री के मन में है। वसंत-रजनी के आने से धरती अपने प्रिय के कदमों की आहट सुनकर पुलकित हो जाती है, जो मिलन की उमंग को दर्शाता है। कवयित्री प्रकृति के सौंदर्य में अपने प्रिय से मिलन की कल्पना करती हैं। यही मिलन की आकांक्षा महादेवी वर्मा के काव्य का केंद्रीय भाव है।

---

birlaeducation.org